द्वितीय अध्याय

शिवानी का : व्यक्तित्व एवं कृतित्व ---

द्वितीय अध्याय

शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व ----

शिवानी : व्यक्तित्व ---

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथात्मक साहित्य में लेखिकाओंका स्थान अद्वितीय है। उस में शिवानी का नाम बडे आदर के साथ लिया जाता है। शिवानी नारी होने के नाते उन्होंने नारी मन की गहरी अनुभूतियोंको पहचाना है। साथ ही अपने साहित्य में चित्रित किया है। अत: शिवानी के नारी पात्रों की विशेषता है कि, नारी की व्यथा जो सौन्दर्य के कटु अनुभव उठाते पाठकों के दिल में छा जाती है। कहीं प्रेम और विवाह की समस्याए तो कहीं राजनीति और रोमान्स का सिलसिला जारी रहता है। शिवानी ने बडे उपन्यास, लघु उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, बालसाहित्य, रिपोतार्ज, आदि विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। ऐसे लेखिका का व्यक्तित्व देखना गौरव की बात है।

शिवानी का जन्म राजकोट में १७ अक्तुबर १९२३ विजयादशमी के दिन प्रात:काल हुआ। आँखे खोलते ही शिवानी को अपने चारों ओर साहित्यिक

वातावरण मिला। इनका बचपन का नाम गौरा था। इनके पिता प्रो. अश्विनीकुमार पाण्डे, रामपुर रियासत के गृहमंत्री थे। राजकोट के कॉलेज में गार्जियन ट्यूटर थे।

शिवानी की माँ लीलावती पाण्डे साहित्य प्रेमी सुसंस्कृत महिला थी। घर की लायब्रेरी में गुजराती, संस्कृत, हिन्दी, पुस्तकों का भण्डार नित्य नवीन रहता था। मुंशी, मेघाणी, उनके प्रिय लेखक थे।

शिवानी के पितामह संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। वे कुमाउ के प्रथम ग्रेज्युएट थे। उनकी ख्याति वकील के रूप में थी। पं. मदनमोहन मालवीय उनके स्नेही एवं परम मित्र थे।

शिवानी के नाना नामांकित सिविल सर्जन थे। बलरामपुर आश्रम की शुरुवात उस समय एक झोपडी में हो गयी थी। वह झोपडी आज भी आश्रम के रूप में वहाँ स्थित है। नाना की तरह नानी भी लखनऊवासियों के सामाजिक जीवन में बहुचर्चित थी।

शिवानी के परनाना एक ख्यातिप्राप्त कवि थे।

शिवानी के बड़े भाई का नाम त्रिभुवननाथ है, उनकी शिक्षा अँग्रेज गवर्नेस मिस ममफर्ड की देखरेख में हुयी थी। बड़ी बहन जयन्ती को शान्तिनिकेतन भेजा गया वहाँ उसका अनुकरणीय आदर्श व्यवहार एवं अनुशासन के लिए गुरुदेव ने उसका नाम 'भारतमाता' रखा था। शिवानी का छोटा भाई राजा एक सफल पत्रकार है।

शिवानी नौसाल गुरुदेव के शान्तिनिकेतन में उनकी गुरुछाया में पली है। शिवानी को इन दिनों घुड़सवारी का शौक था। हाल ही में चल बसे 'भारत रत्न' सत्यजित राय और बंगाल की सुप्रसिध्द गायिका सुचित्रा मित्रा,

शांतिनिकेतन में शिवानी के सहपाठी थे। आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी शांतिनिकेतन में हिन्दी अध्यापन का कार्य करते थे।

बी.ए.होने के बाद शिवानी का विवाह हुआ। उनके पति पढ़े लिखे एक विद्वान थे। प्रथम वे लेक्चरर रहे बाद में शिक्षा मंत्रालय में ज्वाइंट सेक्रेटरी। शिवानी ने पति के बारे लिखा है कि ` शायद मैं लव मेरिज करती तो इतना अच्छा पति नही मिलता। क्योंकि "उनकी वजह से ही मैं लिखने के बारे में सोच सकी। उनकी वजह से कभी कोई बाधा न आयी। बड़ी सराहना भी करते थे, पर सैंसर भी करते थे। मेरे चारो बच्चे लायक बने इसका श्रेय उन्हीको ( पति को ) है, मेरे बच्चों पर हमेशा सरस्वती की कृपा रही।` [१]

शिवानी के पति की मृत्यु ` तिथि ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी २५ मई १९७४ है [२]। पति चल बसने के बाद शिवानी की मनस्थिति ढल गयी इस अवस्था में उनके हितैषी अमृतलाल नागर जी ने उन्हे पुन: लिखने की ओर प्रेरित किया।

शिवानी सफल लेखिका है उन्हे लेखिका बनने के लिए वातावरण और परिस्थितियाँ उपयुक्त थी इसका स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने लिखा है --
` मैं नौ वर्ष शांतिनिकेतन में गुरुदेव के संरक्षण में रही उसका भी मुझपर प्रभाव पड़ा। लिखने प्रति मेरा रुझान बचपन से ही था। यों कह सकते है कि मेरे अन्दर लेखिका बनने का बीज मौजुद था, और उपयुक्त वातावरण मिलनेपर मै लेखिका बन गई। मैं नही मानती कि कोई किसी घटना से प्रभावित होकर लेखक बन सकता है। उदाहरण के लिए किसी प्रियजन की मृत्यु से दु:खी होकर कोई सन्यासी बन सकता है किन्तु लेखक नही बन सकता। [३]

---

१) धर्मयुग - लेख - शिवानी शब्द शब्द कहानी - ले.पद्मा सचदेव,पृ.१८।

२) शिवानी से पत्रव्यवहार द्वारा प्राप्त--- दि.२२-१-१९९२।

३ एक थी रामरती - शिवानी - दुर्गाप्रसाद - नौटियाल से बात चीत (हिन्द पॉकेट बुक्स - सरस्वती सीरीज, पृ.१८।)

ओरछा में बचपन में शिवानी ने मलेरिया से व्यथित होकर कविता लिखी थी —— वह उनकी प्रथम कविता (रचना) थी ।

`नीको नही लागे मात
धी को देख जी आघात
हाय राम आठो जाम
कैसी कंप कंपाई है ।
थके बेन झुके नैन
तापे लात हो कुनैन
थम से हमारी प्रभु
हवे गयी सगाई है ।
याही ओरछा में को
इच्छा करे हमारी प्रमो
मोरचा ले काल सो
अकेले की लड़ाई है ।` [१]

ओरछा नरेश ने प्रस्तुत कविता सुनकर अपना सुंहरवाला कीमती सोने का सिगरेट केस शिवानी को भेंट दिया परंतु शिवानी ने उसे स्वीकार नहीं किया । नरेश ने शिवानी को पद्रंह रुपये का इनाम दिया । वह पद्रंह रुपये पाकर शिवानी बहुत खुश हुई ।

शांतिनिकेतन में चलनेवाली आशु कविताओं में शिवानी ने भाग लिया था, लड़कियों के लिए विषय दिया `इफ आय वर अ बॉय` और लड़कों के लिए` इफ आय वर अ गर्ल` शिवानी ने लिखा `इफ आय वर अ बॉय बिल बिकम ऑफ द बॉय आय लव्ह ।`

---

१ धर्मयुग - लेख - शिवानी शब्द-शब्द कहानी - ले.पद्मा सचदेव - पृ.१७। अंक १६ मार्च 1982

प्रस्तुत प्रतियोगिता में शिवानी को दस रुपये का पुरस्कार मिला था। वह पुरस्कार नोबेल पुरस्कार से कम न था।

शिवानी की पुत्री मृणाल पाण्डे हिन्दी की उभरती लेखिका है। इस प्रकार शिवानी का सारा परिवार साहित्यमय हो गया है।

शिवानी के लोकप्रियता के कारण उनका सर्वाधिक लोकप्रिय लघु उपन्यास 'करिए छिमा' पर विनोद तिवारी निर्देशित फिल्म बन गयी है। 'सुरंगमा', 'रतिविलाप', 'मेरा बेटा', 'तीसरा बेटा' आदि कृतियोंपर दूरदर्शन धारावाहिक बन रहे है।

शिवानी का कृतित्व --

अ) बड़े उपन्यास --

१	मायापुरी	सन १९५७
२	चौदह फेरे	सन १९६०
३	कृष्णकली	सन १९६२
४	भैरवी	सन १९६९
५	श्मशान चम्पा	सन १९७२
६	सुरंगमा	सन १९७९
७	अतिथि	अप्राप्य
८	कल खुसरो अपने घर	सन १९८२
९	कालिंदी	सन १९९०

ब) लघु उपन्यास --

१) कैंजा	सन १९७५
२) विषकन्या	सन १९७७
३) रतिविलाप	सन १९७७
४) माणिक	सन १९७७
५) रथ्या	सन १९७७
६) तर्पण	सन १९७७
७) गैंडा	सन १९७८
८) किशाउली का ढौँट	सन १९७२
९) करिए छिमा -	सन १९७७
१०) कृष्णावेणी	सन १९८१
११) मोहब्बत	सन १९८४
१२) विर्का	सन १९८५
१३) तीसरा बेटा	सन १९८५
१४) पूतोंवाली	सन १९८५
१५) बदला	सन १९८६
१६) पाथेय	सन १९८९
१७) चांचरी	सन १९९० ।
१८) फिर बेर्की ? फिर बे ?	सन १९९२

क) कहानी संग्रह ---

१) लाल हवेली	सन १९६५
२) पुष्पहार	सन १९७५
३) उपहार	-
४) मेरी प्रिय कहानियाँ	सन १९७४
५) स्वयं सिध्दा	सन १९७४ ।

अ) संस्मरण --

१) चार दिन की
२) आमादेर शांतिनिकेतन
३) बिन्दु
४) एक थी रामरती ।

इ) रिपोतार्ज ---

१. अपराधिनी ।

ई) यात्रा वृत्त --

१) चरवैति
२) यात्रिक

उ) निबंध संग्रह ---

१) वातायन
२) गवाक्ष
३) दरीबा
४) झुला
५) जालक
६) झरोखा

ऊ) बाल साहित्य ---

१) अलविदा हर हर गंगे
२) राधिका रानी
३) स्वामिभक्त चूहा

ए) विविध —

१) कुमाउ की जंगल कथाए

२) कुमाऊ की पक्षी कथाए

३) गुरुदेव और उनका आश्रम

आज कल शिवानी रेडिओ-एकांकी भी लिख रही है। उनकी भाषा में संस्कृत, उर्दू, पहाडी का पुट दिखायी देती है।

पुरस्कार एवं सम्मान ---

शिवानी की साहित्य साधना देखकर भारत सरकारने पद्मश्री ` उपाधि से सम्मानित किया है।

१) भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार

२) उर्दू अकादमी द्वारा प्रदत साहित्य उंचाई (१९७९)

३) राज्य पुरस्कार - रामचंद्र शुक्ल पुरस्कार सन १९७०-७१

४) प्रेमचंद पुरस्कार - सन १९७४-७५

५) विशेष पुरस्कार - सन १९७६-७७

६) बिहार राज्य सरकार की ओर से महादेवी पुरस्कार

७) हिन्दी संस्थान सम्मान (उ.प्र.) सन १९९० ।

इस प्रकार आज भी शिवानी लिख रही है। उनका साहित्य हिन्दी के लिए अमोल देन है। शिवानी अब लखनऊ में गुलिस्ता कालोनी में वास्तव्य कर रही है।

१६ अक्तुबर और १ नवम्बर १९९२ के "धर्मयुग" में मैंने शिवानी द्वारा लिखित " फिर बे की ? फिर बे ? " लम्बी कहानी को पढ़ा इस समय तक मेरा प्रबन्ध लेखन समाप्ति पर था । तथापि मैंने शिवानी की प्रस्तुत रचना को भी अपने शोध प्रबन्ध में स्थान देने का प्रयास किया ।